आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 1/मार्च 2024
Received: 20/03/2024; Accepted: 21/03/2024; Published: 24/03/2024

लेख

दक्षिण में राम का शहर होन्नावर

- **प्रो. टी. आर. भट्ट**

प्रो. टी. आर. भट्ट, **दक्षिण में राम का शहर होन्नावर**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 1/मार्च 2024,(79 -82)

मेरे पैतृक गाँव होन्नावर में 6-5-23 को चुनाव प्रचार के निमित्त उत्तर प्रदेश से श्री आदित्यनाथ योगी पधारे थे। शाम का वक्त था। यहाँ के प्रोटेस्टंट स्कूल के मैदान में पच्चीस हजार लोगों की भीड़ थी। योगीजी आरंभ में दो तीन वाक्य कन्नड में कहकर बाद में हिंदी में 15 मिनट तक बोले।

होन्नावर एक ऐतिहासिक, पौराणिक, धार्मिक छोटा सा शहर है। अरबी सागर और शरावती नदी के तट पर बसा है। एक तरफ लंबी शरावती नदी बहते हुए सागर को गले लगाती है। शहर की आबादी आजू-बाजू के गाँवों तक फैली है। वास्तव में होन्नवर राम का शहर है। शहर में, गाँवों में रामायण से संबंधित खूब मंदिर हैं। हजार वर्ष पूर्व आदि शंकर ने इसी रास्ते से होकर आगे की यात्राएँ की हैं। इसी समुद्री तट के आगे 40 कि.मी. की दूरी पर गोकर्ण है जहाँ रामकथा से संबंधित खूब मंदिर हैं। इसी क्षेत्र में आदि शंकर ने 'रामचंद्रापुर मठ' की स्थापना की थी। बताया जाता है कि पोर्तुगीज के हमले के कारण यह मठ गायब हो गया था। फिर से इस मठ का पुनर्निमाण हुआ था। अब इसी गोकर्ण में रामकथा पर वहाँ के मठ के ही स्वामी द्वारा निरंतर व्याख्यान होता आया है। स्वामीजी कन्नड में नयी " भाव रामायण" लिख रहे हैं। इस इलाखे में 12, 13 वीं सदी के करीब मध्वाचार्य के प्रभाव के कारण यहाँ रामभक्ति का खूब प्रचार होता आया है।

कन्नड के प्रसिद्ध कवि नागचंद्र (अभिनव पंप नाम से विख्यात, 12 वीं सदी) ने अपने रामकाव्य "रामचरित पुराण' (पंप रामायण) में उल्लेख किया है कि " होन्नावर " अयोध्या श्रीराम के अधीन था। रामभक्त कवि नागचंद्र निष्ठावान जिन भक्त था। नागचंद्र की 'रामचरित पुराण' कन्नड की पहली रामायण है। उन दिनों होन्नावर जैनों का प्रसिद्ध क्षेत्र होने के कारण नागचंद्र ने यहाँ यात्रा की होगी।

15 वीं सदी में गोवा पर पोर्तुगीजों ने धावा बोल दिया था। उनके हमले से बचने के लिए वहाँ के गौड सारस्वत और सारस्वत आसपास के शहरों, गांवों में जाकर बस गए। मूलतः ये लोग व्यापारी हैं, कोंकणी इनकी

मातृभाषा है। । इन्हीं लोगों के कारण होन्नावर में राम भौर हनुमान मंदिर बने । सारस्वत लोग मुख्य रूप से शिवभक्त हैं। गौड सारस्वत वैष्णव हैं। सारस्वत लोगों का मूल मठ यहीं पास में है। होन्नावर से 8 किमी. दूरी पर चंदावर (चंद्रपूर) नामक बडा गाँव है। यह गाँव प्रसिद्ध ऐतिहासिक और पौराणिक स्थान है। यहाँ सब से पहले गोवा से सारस्वत आये, फिर क्रिश्चियन और मुसलिम समुदाय आये। चंदावर पुराने जमाने में प्रसिद्ध था, सारस्वत लोगों की बडी संख्या इधर भी, बाद में अन्यत्र चले गए। यहाँ पर उनका एक मठ भी है। इसी चंदावर में सब से पुराना गिरजाघर (इगीर्जी कन्नड में, यह पोर्तगीस शब्द से आया होगा) है- सेंट फ्रांसिस जेवियर चर्च (सन 1678) यह केथोलिक लोगों का है। यहाँ पर एक पुराना मसजिद भी है। साथ ही इस चंदावर में एक प्राचीन हनुमान मंदिर है जिसे एक शक्तिपीठ माना जाता है। भक्ति युग में इसका निर्माण हुआ होगा। होन्नावर शहर में प्रोटेस्टंट लोगों की इगर्जी है। इसका सीधा संबंध 3 कोटायं (केरल) से है, ये लोग मलयालम बोलनेवाले हैं।

होन्नावर के पास ही और एक इतिहास प्रसिद्ध गाँव है- गुंडबाळा जहाँ पर प्राचीन काल का बड़ा हनुमान मंदिर है जो पोर्तुगीज आने के पूर्व ही बना था। यह क्षेत्र यक्षगान के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पर मनौती खेल कई महीनों तक खेले जाते हैं। पोर्तगीजों के कारण यहाँ खूब धर्म-परिवर्तन हुआ है। इसी गाँव में दो गिरिजाघर हैं। एक तो 1811 में बना था। दूसरा इसके पूर्व का है। बताया जाता है कि यह गांव जैन रानी चेन्न-भैटर भैरादेवी के अधीन था। यहाँ उन दिनों कालीमिर्च का खूब व्यापार होता था और छोटा जहाज नदी में इस गांव तक आया करता था। आजकल मछुआरों की संख्या खूब है। यहाँ पर एक बहुत बडा कुआं है जिसमें उस जमाने में कालीमिर्च डूबो देते थे, यहीं से कालीमिर्च जलमार्ग द्वारा निर्यात के लिए पहुँचायी जाती थी।

होन्नावर शहर से तीस कि.मी. की दूरी पर गेरुसोप्या नामक बडा देहाती इलाखा है जो जंगल से भरा है, यह शरावती नदी के तट पर बसा है। यह इलाखा सन् 1409 से 1610 तक जैन शासकों का केंद्र रहा है। है। यहाँ चेन्नभैरादेवी नामक रानी ने 1552 से 1606 तक शासन किया था। यह 'कालीमिर्च की रानी' (करिमेम्णसिन राणी- कन्नड में) नाम से प्रसिद्ध थी। होन्नावर काली मीर्च, दालचीनी, जायफल, लोग, काजू आदि के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ से समुद्री मार्गद्वारा इन मसाले चीजों का निर्यात अरब, यूरोप आदि देशों के लिए होता था। उस जमाने में होन्नावर मछली पकड़ने का भी बंदरगाह था।

इसी बंदरगाह के द्वारा रानी चेन्न भैरादेवी मसाले की चीजें खूब भेजती थी। इसकी बहिन चेन्नादेवी पास के भटकल तहसील की रानी थी। सन् 1542 में भटकल पर पोर्तगीयों ने हमला किया और उसे जलाया भी। फिर से वह शहर बसाया गया । चेन्नभैरादेवी एक धीर, साहसी उदार दिलवाली रानी थी जिसने लंबी अवधी तक शासन किया था। निरंतर 54 वर्ष तक शासन करनेवाली भारतीय रानी इतिहास में नहीं है। दुर्भाग्य से इस रानी का नाम ज्यादा प्रकाश में नहीं आया। उसके संबंध में बहुत कम लिखा गया है। इसने पोतगीजों से दो बार युद्ध (1559 और 1570) किया था है और उस युद्ध में जीत हासिल की थी। पोर्तुगीज जानते थे कि रानी तेज बुद्धिवाली है और व्यापार में कुशल है, कूटनीतिज्ञ है। अतः आगे के दिनों में रानी से युद्ध करना छोड दिया। साथ ही पोर्तुगीज यह जानते थे कि कोचीन के कालीमिर्च के बजाय यहाँ का कालीमिर्च गुण कई दृष्टि से श्रेष्ठतर है।

'रानी अविवाहित थी। उदार बुद्धिवाली थी । उस समय सारस्वत ब्राह्मण मन-परिवर्तन से डरकर रानी की शरण में गए, रानी ने उन्हें आश्रय देकर रक्षा की थी, साथ ही रानी ने आजू-बाज के शैव, वैष्णव मंदिरों को

अनुदान दिया था। यह साळुवंश की अंतिम रानी थी। इस वंश के कोई उत्तराधिकारी भी नहीं थे। इस अंतरराष्ट्रीय ख्यातिवाली रानी पर हमारे ही लोगों ने (पास के शासकों ने) आक्रमण कर बंदी बनाया और बंधन में रानी ने देहत्याग किया, उस समय उसकी उम्र 75 वर्ष के करीब थी। पोर्तुगीजों ने रानी के अप्रतिम साहस को देखकर " The Queen of Pepper (Raina-Da- Pimenta) : कालीमिर्च की रानी' नामक प्रशस्ति दी थी। सचमुच She was the pride of India

होन्नावर शहर के प्रवेश के पहले कर्नल खंभा (Colonel Pillar नाम से) ऊंचे टीले पर विराजमान है। ब्रिटिश शासनकाल में कर्नल गेरुसोप्पा में सेनाधिकारी था। वह युद्ध में मारा गया। रानी, एलिजावेथ ने इसे यहाँ भेजा था। उनके शरीर को लाकर समाधि बनायी गयी है (20 जनवरी 1854) । इस टीले पर खड़े होकर देखेंगे तो अरबी समुंदर और पूरा शहर ठीक गोचर होगा। इसी टीले से एक कि.मी. की दूरी पर यह प्रसिद्ध रामतीर्थ है। जहाँ जलधारा ऊपर से गिरती हैं। यह अवश्य भक्ति युग की देन है। इस तीर्थ का संबंध होन्नावर शहर के राममंदिर से है। आज भी वनमहोत्सव के दिन राम की उत्सव-मूर्ति को पालकी में बिठा कर शहर से दो कि. मी. दूरी पर लाकर स्थित रामतीर्थ पर ले जाया करते हैं। तीर्थ के ऊपरी जगह पर रामलिंगेश्वर, (शिवमंदिर) है। यहाँ शैव भट्ट लोग मंदिर के पूजारी हैं। राम की उत्सव - मूर्ति को नीचे तीर्थ पर ले जाते हैं। वहीं पूजा आदि संपन्न होती है। बाद में तहाँ वन भोजन चलता है। करीब सौ से अधिक सीढियाँ उतरकर तीर्थ की जलधारा तक जाना पड़ता है। यह बताया जाता है कि राम, लक्ष्मण, सीता के नाम पर तीन धारा निरंतर बहती रहती है। अब सीता का तीर्थ (धारा) लगभग बंद हो गया है। यहाँ पहुँच कर नहाना पवित्र माना जाता है। खासकर के मनोरोगी को (डिप्रेशन् से पीडित) यहाँ लाकर स्नान कराया जाता है, यह लोगों का विश्वास है कि रोग से मुक्ति मिल जाएगी। इसके पीछे वैज्ञानिक कारण है। तालाब या तीर्थ के ऊपर रामलिंगेश्वर मंदिर है। दंतकथा के अनुसार राम ने रामलिंगेश्वर की प्रतिष्ठा की है। इसके निर्माण के पीछे पीछे शैव-वैष्णन के बीच समन्वय देखा जा सकता है। मंदिर में बीच सामने की दीवार पर हनुमान का चित्र है। 'हनुमान चालीसा' कन्नड में लिखा गया है। लोगों का विश्वास है कि वनवास के समय राम ने इस तीर्थ और मंदिर की स्थापना की है। स्पष्ट है कि पूरा होन्नावर इलाखा राम कथामय है। शैव-वैष्णव में भेद अवश्य है लेकिन खूब समन्वय भी देखा जाता है। उस जमाने में रामकथा से संबंधित नाम खूब रखते थे, गांव का नाम, जगह का नाम चबूतरा का नाम आदि विभिन्न जगहों के नाम राममय है। हनुमान का नाम पुरुष रखते हैं लेकिन मैंने देखा कि जनजाति के लोग इन नामों का तद्भव बनाकर रखते थे। यहाँ तक कि जन जाति के लोगों में हनुमान को स्त्री बनाकर रखा गया है। उदा: हनुम-हनुमी । आजकल यह प्रथा कम हो गयी है।

सचमुच होन्नावर मंदिरों से भरा हुआ है। बौद्ध आये फिर जैन, पोर्तुगीज, सारस्वत, गौड सारस्वत, मुसलमान आये, मराठा लोग (शिवाजी के समय) ब्रिटिश आये, प्रोटेस्टंट (कोट्ययम- केरल से) आये, नंबियार वैद्यलोग (उत्तर केरल से) आये ! भट्ट, शर्मा, दीक्षित आदि काशी के अगल-बगल से आये । कितने धर्म ! कितनी भाषाएँ ! मतभेद के बावजूद खूब समन्वय ! संस्कृत, हिंदी, प्राकृत, कोंकणी, अंग्रेजी, उर्दू, दक्खीनी, मराठी, मलयालम - इन सभी भाषाओं का सुंदर संगम ! होन्नावर ।

उपकार स्मरण भारतीय परंपरा की अद्भुत विशेषता है। इसे होन्नावर शहर के केंद्र में एक पुराना भवन (खपरैल का) 150 वर्ष पूर्व निर्मित है। यह भवन 'टप्पर हाल' नाम से मशहूर है। उस समय होन्नावर का कलेक्टर Mr. Thapar था, यह ब्रिटन का था। बहुत उदार, उसके अंदर खूब इन्सानियत भरी थी। गरीब, भूखों

के प्रेमी ! उन दिनों होन्नावर में भयंकर अकाल पड़ा था । Mr. Thapar ने तुरंत रंगून से समुद्री मार्ग द्वारा चावल मंगवाकर लोगों की भूख मिटायी थी। उस समय के ब्रिटिश उच्चाधिकारी ने तुरंत Thapar का तबादला कर दिया था। लेकिन जनता ने उसके उपकार को न भूल कर उसको याद करते हुए Thapar Hall नाम (उस भवन को) रख दिया। अब भी लोग उसे 'टप्पर हॉल' नाम से ही पुकारते हैं। होन्नावर में देखने लायक रमणीय स्थान खूब हैं। पास में ही दस बारह कि.मी. की दूरी पर आयुर्वेद-देवता धन्वंतरी मंदिर है, इतनी बड़ी शिला मूर्ति देश भर में मिलना दुर्लभ है। इसका निर्माण भक्ति युग में हुआ होगा। सदियों पूर्व मुगल आक्रमण से बचाने के लिए इस मूर्ति को कुएँ में डुबोकर रखा था। बाद में इसकी पुन: प्रतिष्ठा की गई थी।

योगीजी ने उस दिन होन्नावर में भाषण देते हुए कहा था- उत्तर प्रदेश और कर्नाटक का संबंध हजारों सालों से है। श्रीराम को वनवास के समय कर्नाटक से, होन्नावर से खूब मदद मिली थी।" अस्तु, समस्त भारत आज जगमगा रहा है, अयोध्या नगरी चमक रही है, साथ ही राम का शहर होन्नावर अपनी पूरी विरासत के साथ प्रकाशमान हो रहा है।

****